श्री चौरासी कोसीय परिक्रमा नैमिषारण्य तीर्थ क्षेत्र

तीर्थाटन – दिग्दर्शिका

महंत संतोष दास खाकी

आश्रम श्री बनगढ़ (कोरौना) सीतापुर

9415777076

-जहाँ जहाँ तीरथ रहे सुहाये । मुनिन्ह सकल सादर करवाये ||"

[रा० च० मा०]

“पृथिव्यानि यानि तीर्थानि तानि सर्वाणि नैमिषे"

[प० पु]

"अनादिकाल से नैमिषारण्य की 84 कोसीय सर्वतीर्थमयी परिक्रमा, अपने निर्धारित समय फाल्गुन शुक्ल प्रतिपदा से 'बोल कड़ाकड़ सीताराम' और भगवान रामादल के 'जयघोष' से आरम्भहोकर अनेक तीर्थों का दर्शन मार्जन करती हुई दस पड़ावों पर क्रमशः निवास करती हुई मिश्रिख तीर्थ के पंचदिवसीय प्रवास के साथ विश्राम लेती रही है।

इस परिक्रमा में देश-विदेश के लाखों श्रद्धालु फाल्गुन कृष्ण पक्ष की अमावस्या को परिक्रमा के व्यास-विन्दु नाधिगारण्य में पहुँच कर भजन-कीर्तन करते हुये रात्रि विश्राम करते हैं तथा प्रातः तिथि परिवर्तन के साथ ही फाल्गुन शुक्ल पक्ष प्रतिपदा में पवित्र गोमती में स्नान कर चक्रतीर्थ के मार्जन के बाद गणेश पूजन कर चौरासी कोसीय पवित्र-परिक्रमा के लिये संकल्पित होकर चक्रतीर्थ का परिक्रमा लगाते हुये भूतेश्वर, ललितेश्वर सहित आदिशक्ति पराम्बा लिङ्गधारिणी ललिता अम्बा का दर्शन-पूजन करते हैं।

तत्पश्चात् तीर्थराज पंचप्रयाग एवं जानकी कुण्ड आदि तीर्थों का मार्जन करते हये हरिनाम संकीर्तन के साथ ही नैमिषारण्य के ईशानद्वार से चौरासी कोसीय परिक्रमा का शुभारम्भ कर देते हैं।

प्रथम पड़ाव - [कोरौना)

दिशा ईशान्, तिथि प्रतिपदा, देवता शिव, कण्डु, गर्ग, अत्रि आदि ऋषि

यह यात्रा नवगौरी देवी की पूजा से आरम्भ होकर पीपल वृक्ष के नीचे स्थित आमूर्तिक देव के दर्शन के साथ दमनक तीर्थ में मार्जन के साथ आरम्भ होती है। मार्ग में निम्न तीर्थों एवं देवालयों के दर्शन एवं मार्जन होते हैं:-

① नर्मदा तीर्थ
② नीलगङ्गा
③ कालिंजर क्षेत्र
④ नीलकण्ठ

आदि तीर्थ एवं देवालयों में दर्शन एवं मार्जन करते हुये श्रद्धालु परिक्रमार्थी 'काण्व वन क्षेत्र' में प्रवेश करते हैं। जहाँ वे निम्न तीर्थों व देवालयों के दर्शन, मार्जन करते हैं। इन सभी धर्मस्थलों का समृद्ध पौराणिक इतिहास है किन्तु लेख लम्बा न हो इसलिये इस लेख में केवल नाम स्पर्श किया गया है।

① भगवान् द्वारिकाधीश देवालय एवं तीर्थ
② त्रेता-शिव मन्दिर
③ महाश्मशान एवं शमशानेश्वर
④ बाबा द्वारिका दास का कूप
⑤ यज्ञ वाराह कूप
⑥ अरुन्धती कूप
⑦ अहिल्या तीर्थ
⑧ बालखिल्य तीर्थ
⑨ सागरेश्वर तीर्थ
⑩ कुरकुरी तीर्थ (रायपुर
①① विद्याकुण्ड आश्रम श्री वनगढ़

"दोहा"

तेहि दिन की दै भाँवरी कीजिय निसि विश्राम । मोद सहित हरि गुन गनिय जागी चौथे जाम ।।

इति || प्रथम पड़ाव कोरौना ||

द्वितीय पड़ाव - [हरैया]

दिशा पूर्व, तिथि द्वितीया, देवता इन्द्र, वशिष्ट, भारद्वाज ऋषि

स्कन्द पुराण के नैमिषारण्य के महात्म्य के अनुसार - परिक्रमार्थी द्वितीया तिथि को प्रातः स्नानादि से निवृत्त हो त्रेता शिव के दर्शन कर कुरकुरी और विद्याकुण्ड का मार्जन करते हुये रामगढ़ में स्थित महाश्रयी नामक तीर्थक्षेत्र में पहुँचते हैं। यहाँ निम्न पौराणिक तीर्थ स्थित हैं:-

① महाश्रयी तीर्थ
② महर्षि गर्ग (सरिता
③ लक्ष्मीकूप
④ भवरूण्डी
⑤ भगवान् चतुर्भुज
⑥ निकटेश्वर तथा
⑦ मोहने शिव सदाशिव

उपरोक्त धार्मिक धर्मस्थलों का दर्शन-मार्जन करते हुये विश्वामित्र क्रोधशमन प्रायश्चित स्थल मोहकमपुर निकटस्थ पहला आश्रम

आदि दर्शन करते हुये परिक्रमार्थी कैलाश आश्रम नामक वन्य प्रान्त में पहुँचते हैं, जहाँ निम्न तीर्थ एवं देवालय स्थित हैं

① अमरावती
② अमरेश्वर
③ अमरकण्टिका तीर्थ
④ महाश्रयी - संगम
⑤ खब्बीस रुद्र

उपरोक्त तीर्थों के दर्शन-मार्जन कर यात्री पुनर्भुग्राम स्थित दह एवं भूर्भुवः ग्राम में भूर्भुवः आवर्त के दर्शन करते हुये, गोमती पार कर हरैया में रात्रि विश्राम करते हैं तथा यहाँ निम्न तीर्थ-श्रृंखला स्थित है:-

① श्री हरिहर झील
② रामजानकी मन्दिर
③ हरिहर महादेव (शम्भूनाथ)
④ बाणेश्वर
⑤ भद्रकाली
⑥ जानकी मन्दिर
⑦ कल्याणी देवीVV
⑧ कल्याणेश्वर तीर्थ
⑨ मोटा नाथ
10 अरुकेश्वर
11 धोधाकी
12 खगेश्वर

"दोहा"

पावन हरिहर क्षेत्र जहँ श्री जानकी निवास ।
धेनुमती मज्जन करहिं रात्रिभर बास ।।
इति ।। द्वितीय पड़ाव-हरैया ।।

[तृतीय पड़ाव - नगवा कोथावाँ

तिथि तृतीया, दिशा आग्नेय, देवता अग्नि [वह्नि] जमदग्नि, मार्कण्डेय ऋषि

तृतीया के दिन परिक्रमार्थी ब्रह्ममुहूर्त में गोमती जल में स्नान करके हरिहर भगवान् का दर्शन करते हये, मोटानाथ तीर्थ में मार्जन करते हैं। जहाँ निम्न तीर्थों के दर्शन होते हैं:-

① जनकपुर मन्दिर (कल्याणमन]
② धनुषक्षेत्र तीर्थ (मौनेश्वर
③ श्वेतद्वीप

उपरोक्त तीर्थों का दर्शन-मार्जन करते हुये यात्री हत्याहरण तीर्थ पहुँचते हैं, जहाँ निम्न धर्मक्षेत्रों का दर्शन करते हैं:-

① भास्कर तीर्थ
② पंचवक्त्रेश्वर
③ वीर हनुमान
④ धेनुकुण्ड
⑤ सूर्यमन्दिर

तत्पश्चात् यात्री नागक्षेत्र में स्थित कुस्थान (नगवा-कोथावाँ पहुँचते हैं। जहाँ निम्न स्थलों के दर्शन-मार्जन होते हैं:-

① वासुकीनाग
② पदुमनाभनाग
③ नागेश्वरनाथ
④ गोपालक्षेत्र
⑤ नाग मन्दिर (मुद्रिका तीर्थ
⑥ शुकतीर्थ
⑦ महर्षि पराशर आश्रम

उपरोक्त स्थलों के दर्शन-मार्जन करते हुये परिक्रमार्थी यहाँ रात्रि-विश्राम करते हैं।

दोहा:

नागग्राम कुस्थान में कीजै तेहि निसि बास । होत भोर चौथे दिवस चलिये सहित हुलास ।।

इति || तृतीय पड़ाव नगवा कोथावाँ ||

- चतुर्थ पड़ावः उमरारी

तिथि चतुर्थी, दिशा दक्षिण, देवता यम, ऋषि-पदुमनाभ, पुलत्स्य

तत्पश्चात् तीर्थयात्री प्रातः स्नानादि से निवृत्त हो मौन यात्रा करते हैं तथा रामपुष्करणी स्थान पर पहुँचते हैं, जहाँ काष्ठमौन नामक तीर्थ में मौन स्नान-मार्जन करके अपना मौन समाप्त करते हैं। तथा सीता राम जी के दर्शन करते हैं। यहाँ आम्र वृक्ष की छाया में बैठने का व अपने शुभ-अशुभ कर्मों के स्मरण का महत्व है। यहाँ कालप्रिय सूर्य के दर्शन होते हैं। आगे मस्तक बैताल नामक ग्राम में क्षेमादित्य तीर्थ व देवालय में दर्शन-मार्जन करते हैं। यहाँ बारह घी के दिये जलाकर आरती उतारने का महात्म्य है। इसी के पश्चिम जम्बुक (जमोखिया) नामक ग्राम में स्थित यमकूप में स्नान करते हैं। फिर निमोसन नामक तीर्थ में मज्जनु करते हैं तथा निमोसनाथ के दर्शन करते हैं। फिर उमरिग्राम [उमरारी] पहुँचते हैं। यहाँ निम्न तीर्थ स्थित हैं:-

① काष्ठमौन
② क्षेमादित्य तीर्थ
③ कालप्रिय सूर्यकुण्ड
④ यमकूप
⑤ निमोसनाथ
⑥ निमोसतीर्थ
⑦ विधिकुण्ड
⑧ कल्याणी देवी
⑨ अर्कनाथ
10 दक्षकन्या
① गिरिधरनाथ

उपरोक्त तीर्थों के दर्शन-मार्जन कर परिक्रमार्थी उमराटी ग्राम में रात्रि विश्राम करते हैं।

दोहा

उमरि वृक्ष पुनीत तहँ तेहि तर कीजै बास। प्रात जागि नितकर्म करि चलिये सहित हुलास ।।१।।
सूर्य साधना क्षेत्र यह तन मन होवे पुष्ट । किये बास नासै सकल चर्मरोग औ कुष्ठ ।।

इति || चतुर्थ पड़ाव - उमरारी ||

पंचम पड़ावः साखिन

दिशा नैऋत्य, तिथि पंचमी, देवता नऋति, ऋषि-गौतम, बाल्मीकि,
प्रातःकाल विधिकुण्ड में स्नान करके निम्न तीर्थों का मार्जन-स्नान करते हुये परिक्रमार्थी आगे बढ़ते हैं:-

① कालियानाग
② भगवान् यज्ञेश्वर (गुंजन ग्राम)
③ मार्कण्डेय वृक्ष
④ मार्कण्डेय कूप
⑤ रोहिणी कूप
⑥ इन्द्रवन तीर्थ (बाइतपुर
⑦ महारुद्र
⑧ दुण्डिराज गणेश
⑨ भगवान् जगन्नाथ (गोड़ा ग्राम)

गोड़ा ग्राम में स्थित भगवान् जगन्नाथ का दर्शन कर परिक्रमार्थी कृतकार्य होते हैं। यहीं पर नीलपर्वत नामक टीला भी है तथा इस क्षेत्र को नीलक्षेत्र भी कहते हैं।

दोहा:चारिभुजा राजत रुचिर चारों फल दातार। सोहत दिव्य स्वरूप धरि अखिलभुवन भरतार ।।

इस तीर्थक्षेत्र में निम्न तीर्थश्रृंखला के दर्शन-मार्जन यात्रीगण करते हैं:

① गंगासागर
② भगवान् कपिलेदेव
③ ब्रह्माश्रम कुण्ड
④ मेरु पर्वत
⑤ भगीरथ
⑥ दुण्डुकेश्वर

तत्पश्चात् परिक्रमार्थी साखिन-गोपालपुर पहुँचते हैं, जहाँ निम्न तीर्थों एवं देवालयों का दर्शन-मार्जन करते हुये रात्रि-विश्राम करते हैं:-

① शंखधारा तीर्थ
② शंखेश्वर महादेव
③ साक्षीगोपाल
④ सस्कन्धधारा
⑤ महर्षि दधीचि

दोहा:
शंखिनि ग्राम निवास करि धरिय नेक चित चाउ । राति जागि आदर सहित करिय रुद्र गुण गाउ ।।

इति || पंचम पड़ाव-साखिन ||

षष्ठम् पड़ावः देवगवाँ

चौरासी कोसीय परिक्रमा का यह क्षेत्र जनपद-हरदोई के अन्तर्गत आता है तथा हिरण्यकशिपु, बलि, बाण आदि रक्ष-संस्कृति के पोषकों की साधना-स्थली के रूप में जाना जाता है। साखिन-गोपालपुर, हरदोई जनपद के अन्तिम पड़ाव के रूप में स्थित है। सन्निकट ही 'दधिग्राम [दही)' महर्षि दधीचि की तपस्या स्थली भी रही है।

षष्ठम् पड़ाव-देवग्राम 'देवगवाँ

दिशा पश्चिम, तिथि षष्ठी, देवता वरुण, ऋषि-वशिष्ठ, द्रोणाचार्य

साखिन रात्रि विश्राम कर यात्रीगण शंखधारा में स्नान करके वह्निका देवी के स्थान पर पहुँचते हैं। यह क्षेत्र रुद्रक्षेत्र के नाम से जाना जाता है। मार्ग में निम्न स्थानों का दर्शन व मार्जन होता है:

① वह्निका देवी
② सीता कूप
③ नीलकण्ठेश्वर
④ श्रृंगअश्वत्थ
⑤ श्रवणक्षेत्र
⑥ दधिधारा

इस प्रकार क्रमशः यात्री द्रोणाचार्य घाट गोमती तट पर पहुँचते हैं। यहाँ पात्र और गुड़ के दान का विशेष महत्व है। गोमती की द्रोणधारा पार करके संगमक्षेत्र का दर्शन-मार्जन करते हैं तथा भगवान् द्रोणाचार्य के दर्शन कर विन्ध्यांचल पर्वत पर स्थित द्रोणेश्वर का दर्शन करते हैं तथा विन्ध्यवासिनी देवी का पूजन करते हुये षष्ठम पड़ाव-देवगवाँ पहुँचते हैं। यहाँ निम्न धर्मस्थलों का दर्शन-मार्जन करते हैं:

① द्रोणगंगा (धारा]
② विन्ध्यवासिनी
③ देवप्रयाग
④ चन्दन तालाब
⑤ अश्वनीकुमार
⑥ अश्वनी तीर्थ
⑦ जम्बूद्वीप
⑧ महारुद्र माधौ
⑨ सर्वतीर्थमय कूप
10 कल्याणी देवी
① वाराहकूप
⑫ विश्वामित्र कुटी

इस रात्रि यात्री देवकग्राम (देवगवाँ) में रात्रि विश्राम करते हैं।

दोहा

करि दर्शन तिनके रुचिर देखिय देवप्रयाग । पायस पूरी विप्र को दीजिय अति अनुराग ।।
महारुद्र माधौ रुचिर तिनको कीजिय ध्यान । सारी निसि विश्राम करि जागिय होत विहान ।।

इति ||

षष्ठम पड़ाव-देवगवाँ ||

सप्तम् पड़ावः मण्डरूआ

दिशा वायव्य, तिथि सप्तमी, देवता वायु, ऋषि-कश्यप, माण्डव्य

सप्तमी तिथि को परिक्रमार्थी प्रातः ब्रह्ममुहूर्त में देवकप्रयाग में स्थान स्नान करके सर्वमयी तीर्थ कूप में मार्जन करके महारुद्र माधौ का दर्शन करते हुये अग्रिम पड़ाव मण्डरूआ के लिये प्रस्थान करते हैं।

मार्ग में निम्न तीर्थ श्रृंखला का दर्शन होता है:

① भगवान् महारुद्र
② मानसरोवर तीर्थ (यहाँ मुक्ता का दान करने का विशेष महत्व है।)
③ हयग्रीव तीर्थ
④ प्रमोद वन
⑤ श्रौणभद्र
⑥ शिवस्थान
⑦ शिवगंगा

उपरोक्त स्थानों का दर्शन-मार्जन करते हुये परिक्रमार्थी वर्मीग्राम स्थित वाल्मीकि आश्रम पहुँचते हैं। यहाँ निम्न तीर्थों का दर्शन-मार्जन करते हैं:

① द्विद्रुम अश्वत्थ
② वाल्मीकि कूप
③ चन्द्रिका देवी (चन्द्रावलि]

उपरोक्त तीर्थों का दर्शन-मार्जन कर यात्री मण्डरुआ ग्राम में स्थित माण्डव्य आश्रम पहुँचते हैं। यहाँ निम्न देवस्थानों के दर्शन-मार्जन होते हैं:

① महर्षि माण्डव्य
② माण्डव्य कूप
③ द्वारिकेश्वर
④ ढुण्डेश्वर
⑤ रामजानकी मन्दिर
⑥ विश्वेश्वर मन्दिर
⑦ श्री राम सरोवर

उपरोक्त तीर्थों का दर्शन-मार्जन करके परिक्रमार्थी यहीं पर रात्रि विश्राम करते हैं।

दोहा:

वाल्मीकि माण्डव्य ऋषि दुण्डेश्वर वृषकेतु । निसि निवास कीजिय तहाँ मण्डरूआ सुखसेतु ।।

इति || सप्तम पड़ाव-मण्डरुआ ||

अष्टम् पड़ावः जरिगवाँ

दिशा उत्तर, तिथि अष्टमी, देवता कुबेर, अंगिरस ऋषि-क्रतु, जरत्कारु,

रात्रि विश्राम के बाद परिक्रमार्थी नित्यकर्म करके रामसरोवर में स्नान करते हैं तथा माण्डव्य कूप का मार्जन करके रामजानकी एवं दक्षिणमुखी हनुमान का दर्शन करते हैं। दर्शन करके अष्टम् पड़ाव [जरत्कारु मुनि की तपस्थली जरिगवाँ की ओर प्रस्थान करते हैं। तथा निम्न तीर्थ मार्ग में मिलते हैं:-

① गढ़मुक्तेश्वर [वैत्रवती]
② चक्रवर्ती देवी
③ शुकताल
④ हरिहरनाथ

उपरोक्त तीर्थों का दर्शन-मार्जन करते हुये परिक्रमार्थी योगी मत्स्येन्द्रनाथ की तपस्थली मछरेहटा में स्थित हरिद्वार को समर्पित तीर्थ पर पहुँचते हैं, जहाँ हरिद्वार तीर्थ का मार्जन करके निम्न देवस्थलों का दर्शन करते हैं:

① हरिद्वार तीर्थ
② फूलमती देवी मन्दिर
③ भारसेनी मन्दिर
④ कुन्द सरोवर
⑤ कुन्देश्वर महादेव
⑥ हनुमान मन्दिर
⑦ रूपकुण्ड

उपरोक्त देवस्थानों का दर्शन करते हुये परिक्रमार्थी वेत्रवती नदी तट पर स्थित कुशावर्त क्षेत्र में पहुँचते हैं। यह क्षेत्र धेनुधारी वन्य प्रान्त में स्थित है। यहाँ यात्री वेत्रवती में स्नान कर निम्न तीर्थों का मार्जन-दर्शन करते हैं:

① कुशावर्त
② कुशावर्त
③ कल्पेश्वर [कल्पकेश्वर

उपरोक्त दर्शन-मार्जन करने के बाद परिक्रमार्थी जरत्कारु ऋषि के आश्रम जरिगवाँ पहुँचते हैं। यहाँ निम्न तीर्थों का दर्शन-मार्जन करते हैं:

① माधौ भगवान
② महुआ भैटन
③ महाकालेश्वर
④ मन्मथेश्वर
⑤ जरत्कारु आश्रम
⑥ मधुकुन्द विद्यासागर तीर्थ

उपरोक्त तीर्थस्थलों का दर्शन-मार्जन कर परिक्रमार्थी जरिगवाँ में रात्रि विश्राम करते हैं। यहाँ परिक्रमा की परिधि समाप्त होती है।

दोहा:

सिद्धि दायक पावन परम यह परिक्रमा ललाम । देव दनुज सेवित सुखद सब विधि पूरन काम ।।

इति || अष्टम् पड़ाव जरिगवाँ ||

(नवम् पड़ाव-नैमिषारण्य]

दिशाः पाताल (अधो, तिथिः नवमी, देवताः अनन्त, ऋषिः शौनक, सूत

जरिगवाँ में रात्रि विश्राम के उपरान्त परिक्रमार्थी प्रातः ब्रह्ममुहूर्त में स्नान कर नैमिषारण्य की ओर प्रस्थान करते हैं।

"जै गणपति जै चक्र जैति ललिता यशदायक । क्षेमकरी जगदम्ब जैति जन सदा सहायक ।। तुम कीन्ह्यो उपकार किह्यो बाहिरी परिकर्मा । तीर्थन के शुभ नाम ग्राम दानादिक धर्मा ।। हौं मन वच कायक दासतव कृपा और राजि चाहौं। अब ऐसी मति कछु दीजिये भितरी परिकर्मा कहौ ।।"

तत्पश्चात् मार्ग में निम्न स्थान एवं तीर्थों के दर्शन होते हैं:

पंचपाण्डव तीर्थ
पंचपाण्डव कामधेनु संदोहनि देवी (कमईपुर] पदमकनाग (नागपुरी - नगवा कलिन्दी (औरंगाबाद)
रामसरोवर
वीरभद्रेश्वर
चन्द्रप्रभव तीर्थ
चन्द्रमौलेश्वर
भगवान कोटेश्वर
कोटितीर्थ
गयावर तीर्थ
भगवान गदाधर
फल्गू
षोडश वेदिका
अयोध्या
सरयू
स्वर्गद्वार
गोदावरी
हनुमान गढ़ी
व्यास गंगा
व्यास गद्दी

दोहाः

तादिन चक्र निमज्जि कै वास करिय युतचाव । परिकर्मा पावनि परम कीजिय कोस सवाव ।।

इति ।। नवम् पड़ाव नैमिषारण्य ।।

नैमिषारण्य की सवाकोसीय परिक्रमा

तिथिः नवमी, चक्रतीर्थ

नैमिषारण्य पहुँच कर परिक्रमार्थी नवमी तिथि को नैमिषारण्य की सवाकोसीय परिक्रमा करते हैं। सर्वप्रथम चक्रतीर्थ में स्नान करके ललिता देवी के दर्शन करते हैं। फिर गोवर्धन मठ एवं विमला देवी के दर्शन करते हैं, और पंचप्रयाग का मार्जन करते हैं। तत्पश्चात जानकी कुण्ड में मार्जन करके माता जानकी के दर्शन करते हैं। क्षेमकाया के दर्शन करके काशीकुण्ड में मार्जन करते हैं। सूत, शौनक आदि स्थलों का दर्शन करके लोलार्क-कूप को प्रणाम करते हुये हनुमान जी का दर्शन करते हैं। फिर माणिकर्णिका संगम के दर्शन व मार्जन करते हैं। यहीं अन्नपूर्णा की पूजा करके गणेश और कार्तिकेय सहित विश्वनाथ जी के दर्शन करते हैं। फिर काशी के पश्चिम यमपुरी में धर्मराज व चित्रगुप्त के दर्शन करके परिक्रमार्थी नरक नामक तीर्थ में स्नान करते हैं। फिर वारुणी-वाराणसी एवं गोदावरी तीर्थ में मार्जन करते हैं। फिर सुमेरु पर्वत के ऊपर सूतस्थल (सूतगद्दी पर बैठकर, नैमिषारण्य का महात्म्य सुनते हैं। सूतगद्दी के निकट ही जोशीमठ का दर्शन करते हैं। फिर चक्रतीर्थ के पूर्व चक्रतीर्थ की अधिष्ठात्री देवी नेमिधरी देवी का दर्शन करके यात्री ब्रह्मावर्त तीर्थ में आचमन करते हैं।

फिर व्यास गद्दी में व्यास जी का दर्शन करते हैं और निकट ही मानसी गङ्गा में मार्जन करते हैं। सप्तसरोवर, मनुतीर्थ, पुष्कर, गजेन्द्रमोक्ष,गङ्गोद्भद तीर्थ आदि के साथ सूर्यकुण्ड के जल से मार्जन लेते हैं। फिर दशाश्वमेध टीले पर दशावतार का दर्शन करते हैं। फिर साहगर्ज पर यज्ञवराह नामक कूप एवं पंचपाण्डव का दर्शन करते हैं। इस तरह सवाकोसीय परिक्रमा पूरी करते हैं।

सायंकाल यात्री चक्रतीर्थ का मार्जन कर वहाँ हो रहे देवमिलन-महोत्सव में सहभागी होते हैं।

दोहाः

यहि विधि नौमी के दिवस कर तीरथ परधान । दसवें दिन पश्चिम दिशा करिये मुदित पयान ।।

इति ।। नैमिषारण्य सवाकोसीय परिक्रमा पूर्ण ।।

[दशम् बरेठी]

पड़ाव-कोल्हुआ

ऊर्ध्वदिशाः आकाश, तिथि: दशमी, देवताः ब्रह्मा, ऋषिः विश्वामित्र, वशिष्ठ

दशमी के दिन प्रातः उठकर चक्रतीर्थ में स्नान करके गोमती के किनारे-किनारे कोल्हुआ बरेठी की ओर यात्रा करते हैं। मार्ग में निम्न तीर्थों के दर्शन मार्जन होते हैं:

धेनुमती
नैमिषधारा
निमि टीला
कुरुक्षेत्र
श्री ब्रह्माणी गणेश
उत्तरवाहिनी
बोधवती
पुष्कर द्वीप
हंसतीर्थ [हंस हंसिनी]
हंसकुण्ड
काशीराज आश्रम
गोवर्धन
मथुरापुरी
सेतुबन्ध रामेश्वर
धनुष क्षेत्र
देवदेवेश्वर
शिवतड़ाग
नन्दीराज
वीरभद्र
कालभैरव
शारदा देवी
विष्णुकर्त
रुद्रार्त
अथेश्वर (अर्थापुर]
क्षीरमती गङ्गा
आम्रभेंटन
बाणगङ्गा
केदार
नर नारायण
बद्रीनाथ
तुङ्गनाथ
त्रियुगीनारायण
त्रियुगीतीर्थ

इस प्रकार बद्रीनाथ क्षेत्र में यात्रीगण रात्रि विश्राम करते हैं। इस क्षेत्र में कार्तिक शुक्लपक्ष में रात्रि विश्राम एवं शिव आराधना का विशेष महत्व है।

दोहा

बदरीबन सोहत सुभग देवपुरी के पास । अर्धरात्रि दुन्दुभी सुनै करि निसि तहाँ निवास ।।

इति ।। दशम् पड़ाव-कोल्हुआ बरेठी ।।

एकादश पड़ाव-मिश्रिख

दिशा: उत्तर, तिथि: एकादशी, देवता: विष्णु: नरसिंह, ऋषि: दधीचि

प्रातः काल केदारकुण्ड में स्नान करके परिक्रमार्थी महर्षि दधीचि अस्थिदान स्थली मिश्रिख तीर्थ की ओर प्रस्थान करते हैं। तथा मार्ग में निम्न धर्म-स्थलों में दर्शन मार्जन करते हैं

बटसावित्री तीर्थ
सावित्री तलाव
चित्ररथा गङ्गा
वृन्दावन
सती अनुसुइया
लक्ष्मण टीला
भरत टीला
भरतकूप
मलयाचल
सरश्वेत
कामदगिरि
हनुमानधारा (हनुमान जी
उदरकुण्ड
ब्रह्मकुण्ड
गदाधर
यज्ञेश्वर
भैरवनाथ
दक्षिणेश्वर
सीताकूप
महिष मर्दिनी
महर्षि दधीचि
दधीचकुण्ड

उपरोक्त तीर्थों का मार्जन एवं देवालयों का दर्शन करके यात्रीगण पाँच दिनों तक मिश्रिख तीर्थ की पंचकोसीय परिक्रमा करते हैं। तथा फाल्गुन शुक्ल पक्ष पूर्णिमा स्नान करके होलिकादहन के बाद पुनः प्रतिपदा चैत्र कृष्णपक्ष स्नान के बाद परिक्रमार्थी मुदित मन तीर्थलाभलेकर अपने-अपने घर जाते हैं।

दोहा:

पाँच दिवस अति मुदित मन करिय तहाँ विश्राम । पुनि निज गृह गवनहिं सबहिं सब बिधि पूरन काम ।।

इति ।। नैमिष चौरासी कोसीय परिक्रमा दिग्दर्शिका समाप्त ।।